International Journal of Applied Research 2017; 3(1): 59-63

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2017; 3(1): 59-63
www.allresearchjournal.com
Received: 23-11-2016
Accepted: 29-12-2016

डॉ. रंजीता गोयल
पूर्व–शोधार्थी, विश्वविद्यालय
समाजशास्त्र विभाग, ल.ना.मि.वि.,
दरभंगा, बिहार, भारत

Corresponding Author:
डॉ. रंजीता गोयल
पूर्व–शोधार्थी, विश्वविद्यालय
समाजशास्त्र विभाग, ल.ना.मि.वि.,
दरभंगा, बिहार, भारत

प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षक–शिक्षिकाओं के कार्य संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ. रंजीता गोयल

सारांश
शिक्षा के द्वारा ही मनुष्य पहने जाने वाले परिधान के साथ–साथ अपने उठने–बैठने, चलने–फिरने और सामाजिक रीति रिवाजों को सीखता है। इस शोध कार्य का मुख्य उद्देश्य प्राथमिक विद्यालयों में कार्यर त शिक्षक–शिक्षिकाओं के कार्य संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन करना है। कार्य संतुष्टि लोगों के जीवन और कार्यस्थल में उनकी उत्पादकता का महत्वपूर्ण पहलू है। कार्य संतुष्टि जिम्मेदारी, व्यापक कैरियर के लक्ष्यों को प्राप्त करने के प्रति भागीदारी एवं संगठन की उत्पादकता में योगदार देने का नेतृत्व कर सकता है।

मूल शब्दः– शिक्षक–शिक्षिकाओं, संतुष्टि, सामाजिक रीति रिवाजा

प्रस्तावना
वैश्वीकरण व तकनीकों के बहुतायत उपयागे के कारण गुरु–शिष्य सम्बन्ध में परिवर्तन आ गया है। यह परिवर्तन गुरु के महत्व को कम नहीं कर सकता। हमारा वर्तमान समाज व राष्ट्र परिवर्तन व विकास के एक नाजुक परन्तु अत्यन्त महत्वपूर्ण दौर से गुजर रहा है। ऐसी परिस्थिति में शिक्षक का उत्तरदायित्व और भी बढ़ जाता है। शिक्षकों के ऊपर ही राष्ट्र के भावी निर्माताओं को तैयार करने का दायित्व होता है। हुमायूँ कबीर द्वारा कहा भी गया है– अध्यापक वास्तविक रुप में राष्ट्र के भाग्य का निर्माता है। शिक्षक का कार्य केवल शिक्षित करने तक सीमित नहीं रहा है। बल्कि शिक्षक भविष्य की सीढ़ी पार कराकर लक्ष्य तक पहुंचाता है। समाज की आवश्यकताओं, अपेक्षाओं, आकांक्षाओं, आदर्शों, मूल्यों आदि को वास्तविक रुप देने की जिम्मेदारी भी शिक्षकों को वहन करनी होती है। वास्तव में शिक्षक अपने प्रयासों से भावी समाज की संरचना करते हैं, इसलिए शिक्षकों को 'सामाजिक अभियन्ता' की संज्ञा दी जाती है। वह बालकों को उनकी क्षमतानुसार तैयार कर एक आदर्श समाज का निर्माण करता है। डॉ सैयद्दीन ने एक अध्यापक की महत्ता को बताते हुए कहा है कि –''यदि आप किसी देश की जनता के सांस्कृतिक स्तर को मापना चाहते हैं तो इसका अच्छा तरीका यह है कि आप मालूम करें कि उस समाज में अध्यापकों की सामाजिक स्थिति क्या है तथा उन्हें कितनी प्रतिष्ठा प्राप्त है।''
चूंकि श्रेष्ठ शिक्षकों के अभाव में सुयागे य छात्रगण भी वांछित ज्ञानार्जन में सफल नहीं हो सकते हैं। अच्छी से अच्छी पाठ्यवस्तु भी निपुण शिक्षकों की अनुपस्थिति में प्राणहीन हो जाती है। शिक्षकगण शिक्षा प्रक्रिया को उचित दिशा प्रदान करते हैं। अच्छे शिक्षक छात्रों को वांछित व्यवहार परितर्वन में सहायता प्रदान करते हैं तथा उनको सर्वांगीण विकास के पथ पर सफलतापूर्वक आगे बढ़ाने में सहायक सिद्ध होते हैं। वर्तमान में छात्रों पर शिक्षा का अत्यधिक बाझे है। वे साप्ताहिक परीक्षा, मासिक परीक्षा, छमाही परीक्षा, व वार्षिक परीक्षा के साथ अत्यधिक पुस्तकों के बोझ से दबे हैं। बालकों को गृहकार्य के अतिरिक्त कक्षा कार्य व अन्य विविध क्रियाकलापों में प्रतिभाग हेतु सम्मिलित किया जाता है। इन सभी कार्यों का मूल्यांकन शिक्षकों को करना पड़ता है।
21वीं शताब्दी में भौतिकता का अत्यधिक विस्तार होने तथा ज्ञान के क्षेत्र की व्यापकता के कारण शिक्षा में तीव्र परिवर्तन हो रहा हैं जिससे अध्यापकों की सामाजिक एवं आर्थिक परिस्थितियां, उनका स्वयं का दायित्व और अध्यापन कार्य संतोष तीनों ही प्रभावित हो रहे हैं। एक सफल शिक्षक बहे तर होता है क्योंकि वह अपने कार्यों को अंतर्ज्ञान पर आधारित नहीं करता है बल्कि योजना बनाते हुए सावधानीपूर्वक विश्लेषण करता है, एक अच्छा दृष्टिकोण यह है कि सफल शिक्षक शिक्षण के लिए योग्यता एवं अनुकूल अभिवृत्ति होते हुए जो स्वयं में सुधार हेतु कार्य में व्यस्त रहता है। लोके (1969) के अनुसार कार्य संतुष्टि एक संगठन के अंदर अपने हिस्से के योगदान के प्रदर्शन के माध्यम से लक्ष्यों की प्राप्ति के परिणाम से भावनात्मक आनंद की प्राप्ति है। कार्य संतुष्टि एक ऐसा महत्वपूर्ण

पक्ष है जो किसी भी व्यक्ति के व्यावसायिक कार्य की गुणवत्ता को प्रभावित करता है। जो लोग अपने व्यावसायिक कार्य से संतुष्ट होते है वे व्यक्ति अपने उस कार्य को पूरी लगन व आत्मविश्वास से करते हैं तथा कार्य की पूर्णता के बाद प्रसन्नता का अनुभव करते हैं। कार्य में उनकी रुचि होने के कारण वह अपने कार्य की पूरी निष्ठा से करने का प्रयास करते हैं। ब्लम तथा नेलर के अनुसार– ''कार्य संतुष्टि कर्मचारी की उन अभिवृत्तियों का परिणाम हैं, जिन्हें वह अपने कार्य या व्यवसाय से सम्बन्धित अनेक कारकों एवं सामान्य जीवन के प्रति बनाए रखता है। ''अध्यापन कार्य संतुष्टि अध्यापक के लिए एक प्रकार की अभिप्रेरणा है। जिसके फलस्वरुप अध्यापक अपना कार्य सम्पादित करने में आनन्द की अनुभूति करता है। यह कार्य संतुष्टि केवल व्यैक्तिक स्तर तक सीमित होता है। इसकी व्याख्या सामूहिक रुप से नहीं की जा सकती है। क्योंकि कार्य संतुष्टि किसी अध्यापक में अंतनिर्हित उन सभी मनोवृत्तियों का परिणाम होता है, जिसे अध्यापक अपने अध्यापन व्यवसाय से जीवन काल में बनाए रखने का प्रयास करता है। एक सफल शिक्षक बेहतर होता है क्योंकि वह अपने कार्यों को अंतर्ज्ञान पर आधारित नहीं करता है बल्कि योजना बनाते हुए सावधानीपूर्वक विश्लेषण करता है, एक अच्छा दृष्टिकोण यह है कि सफल शिक्षक शिक्षण के लिए योग्यता एवं अनुकूल अभिवृत्ति होते हुए जो स्वयं में सुधार हेतु कार्य में व्यस्त रहता है। इस प्रकार महासान (1995) के अनुसार, ''शिक्षण निश्चित रूप से सबसे पुराने व्यवसायों में से एक है, आधुनिक औपचारिक स्थितियों विशेष रूप से युवा लोगों के साथ शिक्षक स्वस्थ विकास और स्थिर वयस्क जीवन के लिए शिक्षा, गाड़ी, गाइड आदि का निर्माण करता है।

एक शिक्षक विद्यालय में मुख्य गतिशील बल है। विद्यालय परिस्थितियों में विद्यालय जब तक शिक्षकों का अस्तित्व नहीं है, सब कुछ अर्थविहीन है। राजकीय विद्यालयों में कार्यरत शिक्षक शिक्षिकाओं को व्यावसायिक प्रतिस्पर्धा जैसे निजी विद्यालय के बच्चों से प्रतिस्पर्धात्मक तुलना, शिक्षणेत्तर कार्य में संलग्नता जैसे चुनाव ड्यूटी, पल्स पोलियो, मतगणना, जनगणना, बालगणना, आर्थिक गणना, विभिन्न प्रशिक्षणों में प्रतिभाग व अधिकारियों का दबाव, शिक्षकों की कमी के कारण बहुकक्षा शिक्षण, विभिन्न स्तर के बच्चो के साथ समायोजन, निर्माण कार्य, मध्याह्न भोजन योजना, प्रत्येक सप्ताह दिए जाने वाले अतिरिक्त पोशाहार का भार उन पर होता है। इसके अतिरिक्त प्रत्येक छात्र के आधार कार्ड बनवाने की जिम्मेदारी इत्यादि कारणों की वजह से कुण्ठा, तनाव का सामना करना पड़ता है। वहीं दूसरी ओर निजी विद्यालयों में कार्यरत को काम बोझ, व्यावसायिक असुरक्षा व कभी –कभी प्रबन्धकों के शोषण तथा अभिभावकों की अपने पाल्यों की शिक्षा के प्रति अत्यधिक आशा के कारण तनाव का सामना करना पड़ता है और यही तनाव उनके कार्य को प्रभावित करता है। जिससे उनके कार्य के प्रति संतुष्टि प्रभावित हो सकती है। प्रस्तुत अध्ययन में प्राथमिक स्तर पर कार्यर त शिक्षक शिक्षिकाओं की कार्य संतुष्टि से तात्पर्य व्यावसायिक कार्य संतुष्टि मापनी पर शिक्षक शिक्षिकाओं द्वारा प्राप्त प्राप्तांकों से है।

विद्यालय प्रमुख रुप से शिक्षण कार्य, शोध कार्य तथा प्रसार के साधन होते हैं। अतः प्रत्येक शिक्षक का यह प्रमुख कतव्य होता है कि वह पूर्व में वर्णित शिक्षा के उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु कार्य करें। यह कार्य शिक्षण के माध्यम से ही किया जा सकता है। अतः यह अत्यावश्यक हो जाता है कि शिक्षक तथा उसके प्रमुख कार्य शिक्षण का अध्ययन किया जाय। शिक्षक के व्यवहार के अध्ययन के अंतर्गत व सभी तत्व आ जाते हैं जो शिक्षक के व्यवहार को परिवर्तित करते हैं एवं उसके व्यक्तित्व को प्रभावित करते हैं। उक्त तत्वों के ज्ञान हेतु शिक्षक के कार्य सन्तोष को जानना अति आवश्यक है।

इस लघु शोध अध्ययन में शिक्षकों के कार्य सन्तोष का अध्ययन उक्त आधारों पर ही किया गया है। जिससे उन कारकों को दूर करने अथवा सीमित करने का प्रयास किया जा सके जो शिक्षकों के कार्य संतोष को प्रभावित करते है। इसी प्रकार जो कारक शिक्षक के कार्य संतोष को उन्नत या प्रभावोत्पादक बनाते हैं उनके प्रति अधिक ध्यान दिया जा सकता है। जिससे वह अपनी शक्ति तथा प्रतिभा का समुचित उपयोग कर सके। जिससे अधिक प्रभावशाली ढंग से शिक्षक अपना शिक्षण कार्य करेगा, उतना ही उचित तरीके से वह अपने छात्र के व्यावहारिक प्रतिरुप को वांछित दिशा देने में सफल हो सकता है। अतः वर्तमान में शिक्षकों के कार्य संतोष का अध्ययन किये जाने की अत्यधिक आवश्यकता है। अतः इस शोध की आवश्यकता इसिलिए है ताकि इस पक्ष से सम्बन्धित सभी नीति निर्देशकों, नीति निमार्ताओं, प्रशासकों का सम्बन्धित विषयों पर ध्यान आकर्षित किया जा सके तथा इन समस्याओं पर गौर किया जा सके व आवश्यक सुधार हेतु सुझाव प्राप्त हो व उनका सही निवारण हो सके। जिससे शिक्षकों व शिक्षिकाओं में तनाव न हो तथा उनमें कार्य के प्रति संतुष्टि हो।

शिक्षिक–शिक्षिकाओं की कार्य सन्तुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन से सम्बन्धित आकड़ों का विश्लेषण निम्न हैः–

तालिका 1: निवास स्थान के आधार पर शिक्षक–शिक्षिकाओं की कार्य सन्तुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन

निवास स्थान	न्यायदर्श	मध्यमान	मानक विचलन	ज.मान	सार्थकता स्तर
ग्रामीण	35	22.69	3.41	7.77	0.01
शहरी	25	17.64	1.47		

D.f. = 58, सार्थकता स्तर 0.01 पर ज.मान सार्थकं

उपरोक्त तालिका 1 से स्पष्ट है कि निवास स्थान के आधार पर शिक्षक– शिक्षिकाओं की कार्य सन्तुष्टि में सार्थक अन्तर था (t=7.77)। ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करने वाले शिक्षक–शिक्षिकाओं की कार्य सन्तुष्टि तथा शहरी क्षेत्रों में निवास करने वाले शिक्षक–शिक्षिकाओं की कार्य सन्तुष्टि अलग–अलग पायी गयी। ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करने वाले शिक्षक–शिक्षिकाओं की कार्य सन्तुष्टि, शहरी क्षेत्रों में निवास करने वाले शिक्षक–शिक्षिकाओं की कार्य सन्तुष्टि से अधिक पायी गयी। इसका अधिक स्पष्ट चित्र लाइन ग्राफ 1 से प्रदशित है।

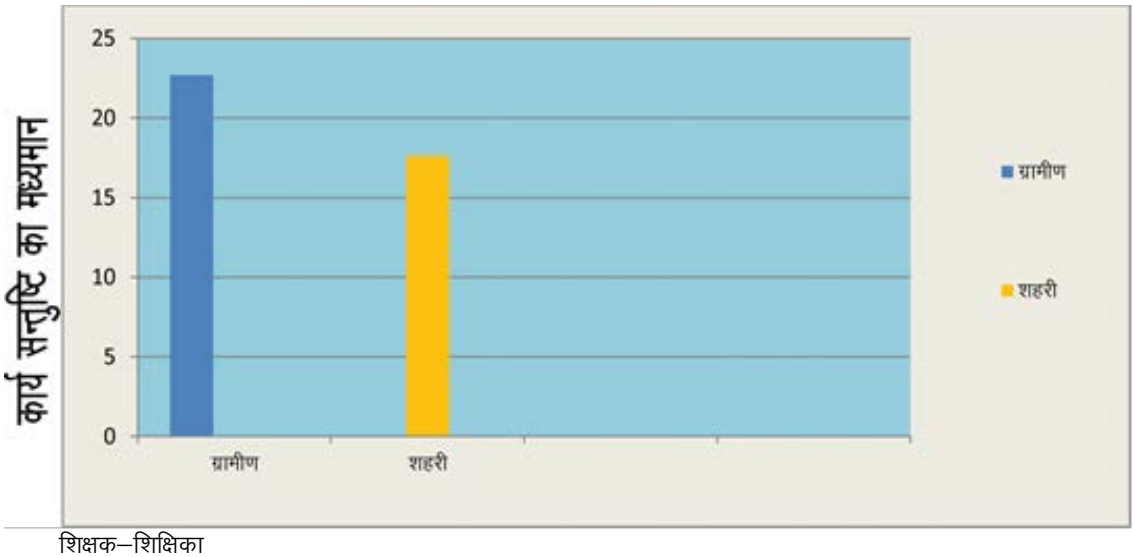

चित्र 1: ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करने वाले शिक्षक–शिक्षिकाओं की कार्य सन्तुष्टि तथा शहरी क्षेत्रों में निवास करने वाले शिक्षक–शिक्षिकाओं की कार्य सन्तुष्टि का मध्यमान

इसका कारण यह हो सकता है कि शहरी क्षेत्र में निवास करने वाले शिक्षक वहाँ के विकास तथा अन्य अधिकारियों के वेतन, सुविधाओं इत्यादि को देखकर अपने जॉब के प्रति नकारात्मक हो जाते है जबकि ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षक इन चीजों को हर वक्त अपने दिमाग में नहीं रखते हो। अन्य कारण यह भी हो सकता है कि शहरी क्षेत्रों में निवास करने वाले शिक्षक जब ग्रामीण क्षेत्रों के स्कूलों में राजे आना–जाना शहर से ही करते है तो वे अत्यधिक थक जाते है जिससे वे जॉब के प्रति संतुष्ट नहीं रहते है तथा ग्रामीण क्षेत्र में शिक्षकों का स्कूल के पास ही कमरा होता है जिससे उनके पास पर्याप्त समय होता है तथा अन्य कार्य भी कर लेते हैं तथा वे अपने जॉब से भी संतुष्ट रहते हैं।

तालिका 2: लिंग के आधार पर शिक्षक–शिक्षिकाओं की कार्य सन्तुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन

लिंग	न्यायदर्श	मध्यमान	मानक विचलन	t. मान	सार्थकता स्तर
पुरुष अध्यापक	33	22.40	3.31	.78	असार्थक
महिला अध्यापिका	27	21.91	1.37		

D.f. = 58, सार्थकता स्तर 0.05 पर ज.मान असार्थकं

उपरोक्त तालिका 2 से स्पष्ट है कि लिंग के आधार पर शिक्षक–शिक्षिकाओं की कार्य सन्तुष्टि में सार्थक अन्तर नहीं था (t=.78)। पुरुष अध्यापकों की कार्य सन्तुष्टि तथा महिला अध्यापिकाओं की कार्य सन्तुष्टि समान पायी गयी। इसका अधिक स्पष्ट चित्र लाइन ग्राफ 2 से प्रदशित है।

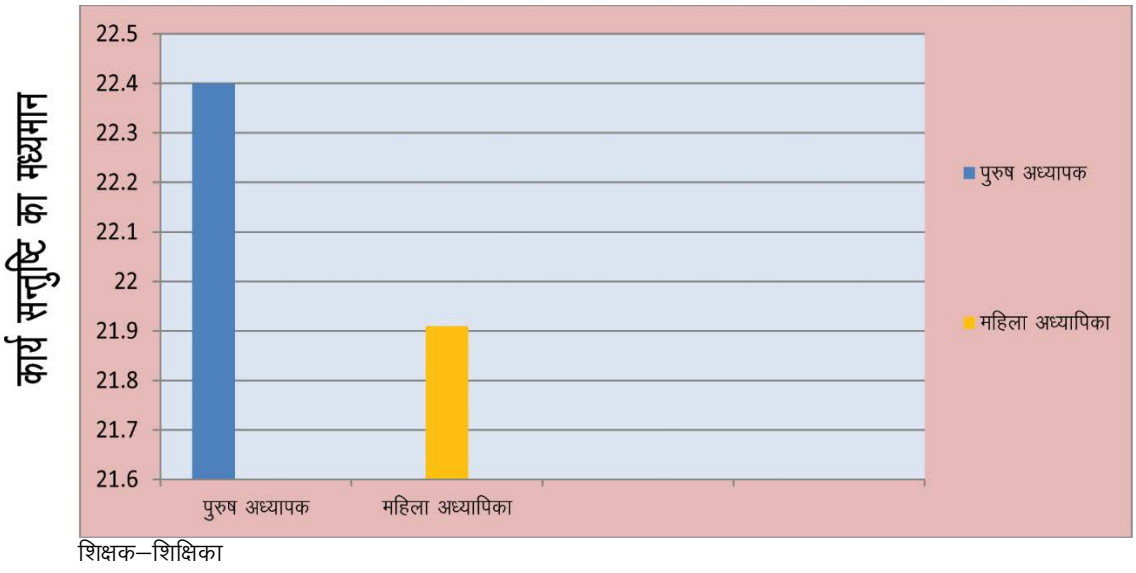

चित्र 2: पुरुष अध्यापकों की कार्य सन्तुष्टि तथा महिला अध्यापिकाओं की कार्य सन्तुष्टि का मध्यमान

इसका कारण सम्भवतः समान वेतन, समान सुरक्षा, समान पदोन्नति के अवसर, समान सेवा, समान योग्यता, कार्यस्थल में समानता, सेवा सम्बन्धी समान नियम, समान अधिकार आदि में समानता हो सकती है। क्योंकि वर्तमान समय में प्रत्येक क्षेत्र में दोनों में किसी भी प्रकार का भेदभाव नहीं किया जाता है।

तालिका 3: शैक्षिक विषय वर्ग के आधार पर शिक्षक–शिक्षिकाओं की कार्य सन्तुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन

शैक्षिक विषय वर्ग	न्यायदर्श	मध्यमान	मानक विचलन	t-मान	सार्थकता स्तर
कला	30	22.7	2.96	6.36	0.00
विज्ञान	30	18.57	1.93		

उपरोक्त तालिका 3 से स्पष्ट है कि शैक्षिक विषय वर्ग के आधार पर शिक्षक–शिक्षिकाओं की कार्य सन्तुष्टि में सार्थक अन्तर पाया गया (t=6.36)। कला वर्ग तथा विज्ञान वर्ग के शिक्षक–शिक्षिकाओं की कार्य सन्तुष्टि अलग–अलग पायी गयी। कला वर्ग के शिक्षक–शिक्षिकाओं की कार्य सन्तुष्टि, विज्ञान वर्ग के शिक्षक–शिक्षिकाओं की कार्य सन्तुष्टि से अधिक पायी गयी। इसका अधिक स्पष्ट चित्र लाइन ग्राफ 3 से प्रदशित है।

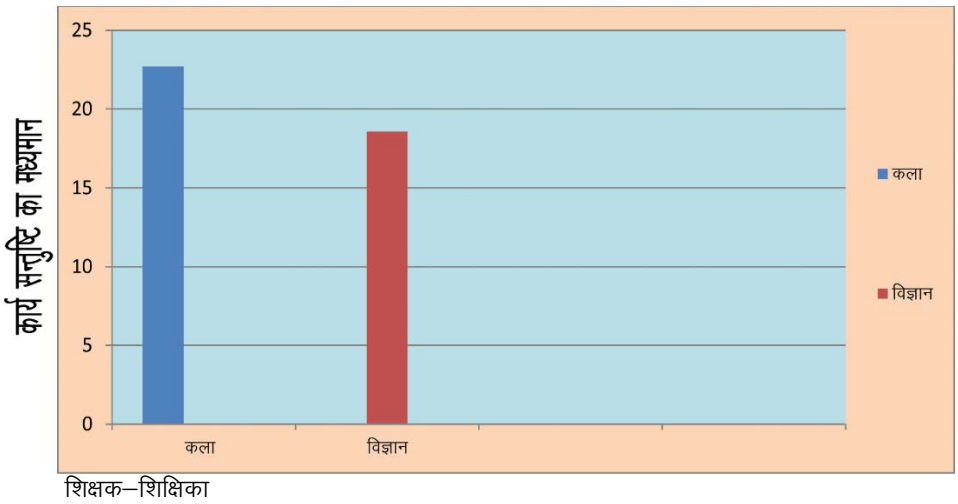

चित्र 3: कला वर्ग के शिक्षक–शिक्षिकाओं की कार्य सन्तुष्टि तथा विज्ञान वर्ग के शिक्षक–शिक्षिकाओं की कार्य सन्तुष्टि का मध्यमान

इसका कारण यह हो सकता है कि विज्ञान वर्ग के शिक्षकों की अपक्षाऐं ज्यादा हो सकती है क्योंकि उन्होंने अपने विद्यार्थी जीवन में विज्ञान विषय की पढ़ाई में ज्यादा मेहनत की होती है। उनके परिश्रम के हिसाब से उनकी इच्छा उच्च स्तर के जॉब की हो सकती है। जबकि कला संकाय के विषयों में विज्ञान की अपेक्षा कम परिश्रम की आवश्यकता होती है जिससे कला वर्ग के शिक्षा का इस स्तर के जॉब से भी ज्यादा निराश नहीं हो सकते हैं।

तालिका 4: राजकीय व निजी प्राथमिक विद्यालयों के आधार पर शिक्षक–शिक्षिकाओं की कार्य सन्तुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन

विद्यालय का प्रकार	न्यायदर्श	मध्यमान	मानक विचलन	ज.मान	सार्थकता स्तर
राजकीय	32	22.28	3.07	7.75	0.01
निजी	28	17.57	1.45		

D.f. = 58, सार्थकता स्तर 0.01 पर ज.मान सार्थक।

उपरोक्त तालिका 4 से स्पष्ट है कि राजकीय व निजी प्राथमिक विद्यालयों के आधार पर शिक्षक–शिक्षिकाओं की कार्य सन्तुष्टि में सार्थक अन्तर पाया गया (t=7.75)। राजकीय व निजी प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षक–शिक्षिकाओं की कार्य सन्तुष्टि अलग–अलग पायी गयी। राजकीय विद्यालयों में कार्यरत शिक्षक–शिक्षिकाओं की कार्य सन्तुष्टि, निजी प्राथमिक विद्यालयों में कायर्र त शिक्षक–शिक्षिकाओं की कार्य सन्तुष्टि से अधिक पायी गयी। इसका अधिक स्पष्ट चित्र लाइन ग्राफ 4 से प्रदशित है।

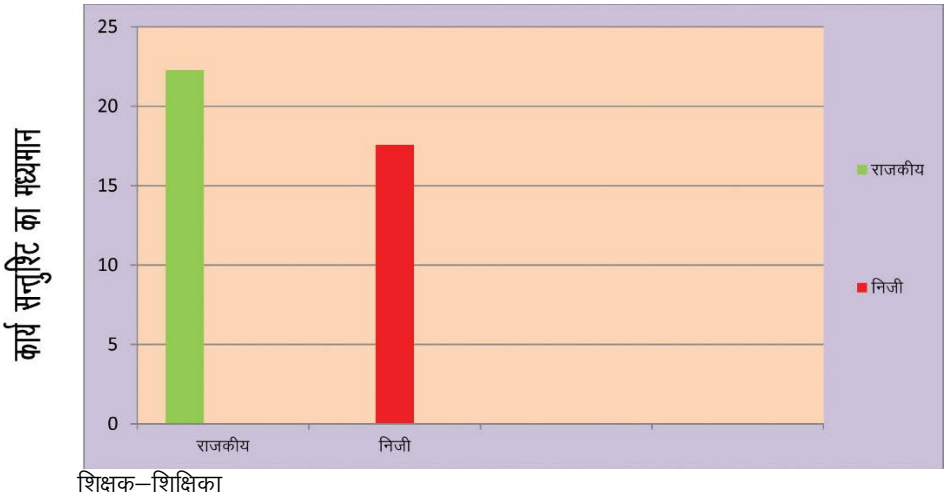

चित्र 4: राजकीय व निजी पाथिमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षक–शिक्षिकाओं की कार्य सन्तुष्टि का मध्यमान

इसका कारण यह हो सकता है कि राजकीय विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की स्थायी जॉब होती है जबकि निजी विद्यालयों में कार्यरत शिक्षक–शिक्षिकाओं की जाबॅ अस्थायी होती है तथा प्राइवटे विद्यालयों में कार्य की असुरक्षा तथा पक्षपात आदि है। जिससे उन्हें अपनी जॉब से हमेशा डर लगा रहता है। इसका अन्य कारण यह भी हो सकता है कि निजी विद्यालयों में कार्यरत शिक्षक–शिक्षिकाओं को स्कूल में कार्य भी अधिक करना पड़ता है। जिससे वे जॉब के प्रति नाखुश रहते हैं।

ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करने वाले शिक्षक–शिक्षिकाओं के कार्य सन्तुष्टि का मध्यमान 22.69, शहरी क्षेत्रों में निवास करने वाले शिक्षक–शिक्षिकाओं के कार्य सन्तुष्टि का मध्यमान 17.64, पुरुष अध्यापकों के कार्य सन्तुष्टि का मध्यमान 22.40, महिला अध्यापिकाओं के कार्य सन्तुष्टि का मध्यमान 21.91, कला शैक्षिक विषय वर्ग शिक्षक–शिक्षिकाओं के कार्य सन्तुष्टि का मध्यमान 22. 7, विज्ञान शैक्षिक विषय वर्ग शिक्षक–शिक्षिकाओं के कार्य सन्तुष्टि का मध्यमान 18.57, राजकीय विद्यालयों में कार्यरत शिक्षक–शिक्षिकाओं के कार्य सन्तुष्टि का मध्यमान 22.28 व निजी विद्यालयों में कार्यरत शिक्षक–शिक्षिकाओं के कार्य सन्तुष्टि का मध्यमान 17.57 था। ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करने वाले शिक्षक–शिक्षिकाओं की कार्य सन्तुष्टि तथा शहरी क्षेत्रों में निवास करने वाले शिक्षक–शिक्षिकाओं की कार्य सन्तुष्टि अलग– अलग पायी गयी। पुरुष अध्यापकों की कार्य सन्तुष्टि तथा महिला अध्यापिकाओं की कार्य सन्तुष्टि लगभग समान पायी गयी। कला वर्ग तथा विज्ञान वर्ग के शिक्षक–शिक्षिकाओं की कार्य सन्तुष्टि अलग–अलग पायी गयी। राजकीय व निजी प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षक–शिक्षिकाओं की कार्य सन्तुष्टि अलग– अलग पायी गयी।

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध कार्य में यह ज्ञात हुआ कि राजकीय व निजी दोनों प्रकार के प्राथमिक विद्यालय में कार्यरत शिक्षक–शिक्षिकाओं में उत्तम कोटी की कार्य सन्तुष्टि है अतः यह जानना आवश्यक हैं, वे कौन–कानै से कारक हैं जो शिक्षकों में चिन्ता व्याप्त करते है निजी विद्यालयों के शिक्षकों की कार्य परिस्थिति वते न, सुविधाएं आदि में सुधार कर शिक्षकों की चिन्ताओं को दूर किया जा सकता है। शिक्षकों के वेतन, कार्य सुरक्षा व पदोन्नति के अवसर सम्बन्धी नियमों में संशोधन किया जाना चाहिए। जिससे शिक्षक इन कारणों की ओर से निश्चित होकर अपना कार्य कर सके। विद्यालयों में फर्नीचर व समस्त सहायक सामग्री उपलब्ध होनी चाहिए। अधिकार, योग्यता तथा कार्य के संदर्भ में भी शिक्षकों को पर्याप्त महत्व दिया जाना चाहिये अपने अधिकारों का दुरुपयोग, अयोग्य अध्यापकों की पदोन्नति तथा वेतनवृद्धि कार्य का असमान वितरण आदि उनके ऐसे कारण है जो कि शिक्षकों के असंतोष मे वृद्धि करते हैं। अतः प्रशासन का सभी शिक्षकों के लिये समान दृष्टिकोण होना चाहिये। इसके साथ–साथ शिक्षकों से इस प्रकार का व्यवहार करना चाहिये कि समाज में सम्मान प्राप्त करने के साथ–साथ वे आर्थिक रुप से भी संतुष्ट रहें।

सन्दर्भ

1. आर. ए. शर्मा (2011)। शिक्षा के दार्शनिक एवं सामाजिक मूल आधार। मेरठः आर. लाल बुक डिपो।
2. उप्रेती, डी0सी0 एवं पन्त, ए. के. (1991)। प्राथमिक तथा माध्यमिक स्तर के शिक्षकों की कार्य संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन। अप्रकाशित एम. एड. लघु शोध प्रबन्ध, कुमाऊँ विश्वविद्यालय, परिसर, अल्मोड़ा।
3. कपिल, एच. के. & सिंह, ममता (2013)। सांख्यिकी के मूल तत्व। आगराः अग्रवाल पब्लिकेशन्स।
4. कौल, लोकेश (2012)। शैक्षिक अनुसंधान की कार्य प्रणाली। नोएडाः विकास पब्लिशिंग हाउस प्राइवेट लिमिटेड।
5. गैरैट, एच. ई. (2000)। शिक्षा और मनोविज्ञान में सांख्यिकी के प्रयागें लुधियानाः कल्याणी पब्लिशर्स।
6. बैस्ट, जे. डब्ल्यू. (2011)। रिसर्च इन एजुकेशनं नई दिल्लीः पी. एच. आई. लर्निंग प्राइवेट लिमिटेड।
7. राय, पी. & राय, सी. पी. (2012)। अनुसंधान परिचयं आगरा : लक्ष्मी नारायण अग्रवाल।